ओम शान्ति दिल्ली, पाण्डव भवन 16-6-13

सर्व ब्राह्मण कुलभूषण भाई-बहनों प्रति गुल्जार दादी जी का याद-पत्र और बापदादा का सन्देश

मधुबन निवासियों प्रति सन्देश

बापदादा के अति प्यारे मधुबन निवासी हमारे विशेष भाई और बहनें, तबियत के कारण शरीर से दूर हैं लेकिन दिल में तो सभी बहुत-बहुत याद हैं। बापदादा को तो मिलते हैं लेकिन सखियों का मिलन सब भाई-बहनों से मिलन बहुत-बहुत याद आता है। आज बाबा को कहा मधुबन याद आ रहा है। बाबा बोले थोड़े दिन का आराम जरूरी है। आज तो आप सब बहुत याद आ रहे हैं। बाबा को सबकी याद दी। सर्व मधुबन निवासी और विशेष हमारी बड़ी सखियाँ सब याद आ रहे हैं। बाबा बोले अब जल्दी हिसाब-किताब चुक्तू हो जायेगा। सभी को याद कर रही हूँ। कहाँ वो मिलन, कहाँ ये - बहुत-बहुत याद आता है।

बाबा को कहा, बाबा आपको तो सब बहुत-बहुत याद करते। बाबा बोले, जो बाप को याद करते है उनको बाप भी बहुत याद करते हैं, एक-एक को याद करता हूँ। फिर बाबा को सबकी याद दी। बाबा ने कहा, सब याद आ रहे हैं। मैंने कहा, आपको सब याद करते, कुछ आप बोलो। बाबा बोले, आजकल बाबा देखते हैं कि व्यर्थ संकल्प भी बच्चों का समय ले लेते हैं, उसको समाप्त करना आवश्यक है। और बापदादा ने इस पर जो कहा वो भेज रही हूँ।

सर्व ब्राह्मणों प्रति सन्देश

बापदादा के अति प्यारे सारे संसार से न्यारे हमारे सर्व भाई-बहनें, देखो ड्रामा में यह प्रकृति का हिसाब-किताब चुक्तू करने के कारण अभी अपने दिल्ली के स्थान में हिसाब-किताब पूरा कर पहुंच गये हैं। वर्तमान समय तो सबके मन में एक ही लगन है कि हमको ब्रह्मा बाप समान बनना ही है क्योंकि हमें भी ब्रह्मा बाप समान अपने राज्य में राज्य करना है। इसके लिए बापदादा से मिलन मनाते अमूल्य खजाने हर रोज जमा करते रहते। क्योंकि इस संगम पर ही आत्मा-परमात्मा का मिलन जो विचित्र मिलन है वो होता है और सर्व प्राप्तियों का वरदान भी है। तो बोलो वो रूहानी नशा स्मृति में रहता है कि वाह हमारा भाग्य! यह स्मृति ही समर्थ बनाती है। समर्थ अर्थात् व्यर्थ को खत्म करने वाला। जहाँ समर्थ है वहाँ व्यर्थ सहज ही खत्म हो जाता है। भक्ति मार्ग में भगवान को देखने के लिए सारी दुनिया चात्रक है और हम उनके अधिकारी हैं। यह नशा है कि बाबा मेरा है, उसने हमें अपने दिल में बिठाया है। यह स्मृतियाँ ही समर्थ बनाती हैं। समर्थ अर्थात् व्यर्थ को समाप्त करने वाला। अगर मेरे में व्यर्थ संकल्प है तो समर्थ संकल्प ठहर नहीं सकता, नीचे ले आता है। व्यर्थ संकल्प बाबा से मिलन का अनुभव नहीं कराता। जो क्यूँ, क्या की उलझन में रहता है, थोड़ी-थोड़ी बात में दिल शिकस्त होता रहता उसके व्यर्थ संकल्प की गति बहुत फास्ट होती है। समर्थ संकल्प वाले जो सोचेंगे वो करेंगे। सोचना और करना दोनों समान होंगे। उनके कर्म और संकल्प सफल होंगे। विशेष बात यह है कि समर्थ संकल्प सदा आत्मिक शक्ति, एनर्जी जमा करता, समय को सफल करता। व्यर्थ क्यूँ-क्या करता रहता है, इसका कारण क्या है। जो बाबा ने मुरली चलाई है, मुरली का एक-एक महावाक्य समर्थ खजाना है। तो इस खजाने को मंथन करते रहें तो जहाँ समर्थ है वहाँ व्यर्थ नहीं आ सकता। परन्तु विशेष बात यह है कि बुद्धि को समर्थ संकल्प से सदा भरपूर रखो। इसका आधार है रोज की मुरली सुनना, समाना और स्वरूप बनना। बोलो सब यह पुरुषार्थ करेंगे ना! सदा खुश रहना, खुशी बांटना और व्यर्थ से मुक्त हो बुद्धि को समर्थ संकल्पों से सम्पन्न करना। अच्छा

दादी जानकी जी के प्रति सन्देश

आज मैं बापदादा के पास खास दादी जानकी की यादप्यार लेके पहुंची। तो मेरे पहुंचने के पहले दादी बाबा के पास पहुंची हुई थी। तो मैंने देखा कि बाबा दादी को गोद में सुला के माथे पर हाथ घुमा रहा था। और हमको देख कहा, आओ मेरी सिकीलधी बच्ची आओ, फिर बाबा ने हमें दादी जानकी से मिलाया। हम दोनों बाबा से मिले। बाबा बोले, बेहद सेवा में बच्ची लगी हुई है इसलिए बाबा सिर पर मसाज कर रहा था। फिर हम दोनों को देखकर दोनों बाहों में हमको समा लिया। हम दोनों बाबा की बाहों में समा गये। बस यह भी दृश्य बहुत प्यारा था। ओम शान्ति।